विदेशी विवरण (Foreign accounts)

प्राचीन भारतीय साहित्य सांस्कृतिक जीवन पर विदेशियों के वृत्तांत, राजनीतिक और सामाजिक दशा पर अधिक प्रकाश डालते हैं। प्राचीन भारत का इतिहास ज्ञान लिखने में विदेशियों का वर्णन भारतीय लेखकों के वर्णनों से अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है जिसका वर्णन निम्न है।

यूनानी और रोमन लेखकों का विवरण →

सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व ईरान के शासक डेरियस ने स्काईलेक्स नामक सैनिक को सिन्धु प्रदेश की जानकारी लेने के लिए भेजा था। उसने सिन्धु नदी से ईरान तक के जल मार्ग का पता लगाया। डेरियस के परसेपोलिस और नक्शेरुस्तम लेखों में भारत का उल्लेख सिद्ध करता है कि उस समय भारत और ईरान के बीच राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित हो चुकी थी।

~~इस युग के दूसरा यात्री हेकेटियस मिलेटस था।~~

सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व हिरोडोटस तथा टेशियस ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। इन्होंने फारसी ज्ञान के आधार पर भारत का वर्णन किया है।

सिकन्दर के साथ अनेक यूनानी इतिहासकार ने भारत में प्रवेश किया और भारत का वर्णन अपनी पुस्तक में किया है। इस समय के समकालीन लेखकों में अरिस्टोबुलस, निआर्कस, चारस और यूमेनीस है। इन्होंने भारतीय घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन अपेक्षाकृत सही रूपों में किया है।

सिकन्दर के परवर्ती लेखकों में मेगास्थनीज, प्लिनी, टालेमी, डायोडोरस, एरियन, प्लूटार्क, कर्टियस, जस्टिन स्ट्रैबो आदि के नाम उल्लेखनीय है। यूनानी लोग इतिहास जानने और लिखने में बहुत रुचि रखते थे और इसी कारण भारत से लौटने के उपरान्त अपनी यात्रा के अनुभवों को पुस्तक-बद्ध कर दिया।

Scanned with CamScanner

सिकन्दर आक्रमण [illegible]

भारत पर सिकन्दर के आक्रमण की तिथि भी यूनानी लेखकों के द्वारा ही ज्ञात की जाती है। टालेमी ने भारत के भूगोल के विषय में और प्लिनी ने पशुओं तथा वनस्पति के विषय में वर्णन किया है।

मेगास्थनीज जो ~~सेल्यूकस~~ का राजदूत था तथा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में भारत आया था। भारत के विषय में इसकी सर्वप्रसिद्ध पुस्तक "इण्डिका" है। इससे चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य काल एवं शासन-व्यवस्था का वर्णन प्राप्त होता है। डायमेकस भी राजदूत था। उसने भारत के सम्राट बिन्दुसार के दरबार का वर्णन किया है। एरियन की पुस्तक से हमें सिकन्दर महान के भारत आक्रमण का ज्ञान उपलब्ध होता है। इसी प्रकार कार्टियस, जस्टिन तथा स्ट्रैबो ने भी भारतीय इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

<u>चीनी विवरण</u> →

यूनानी लेखकों के अतिरिक्त चीनी यात्रियों ने भी भारत का भ्रमण किया तथा तत्कालीन भारतीय स्थिति का वर्णन किया है।

प्रथम शताब्दी ई० पूर्व में चीनी इतिहासकार सुमाचीन ने अपने इतिहास में भारत का उल्लेख किया है तथा भारत के प्राचीन काल का क्रमबद्ध विवरण देने का प्रयास किया।

चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार के बाद अनेक बौद्ध भिक्षुओं ने भारत का वर्णन किया जिनमें गुप्तकाल में फाह्यान ने 5वीं शताब्दी के भारत का वर्णन किया है। साथ ही बौद्ध धर्म के स्तूपों तथा विहारों का, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय के भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक दशा का चित्रण ~~अपनी पुस्तक~~ प्रस्तुत किया है।

फाह्यान के बाद ह्वेनसांग का यात्रा विवरण है। यह हर्ष के राज्य काल में आया था। उसने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया तथा यहाँ के प्रत्येक दशा का सूक्ष्म अध्ययन करके अपनी पुस्तक "पाश्चात्य संसार के लेख" में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दशाओं का वर्णन किया है।